

# সমকালীন পাশ্চাত্য অধিবিদ্যার আলোকে সামান্যতত্ত্বের পর্যালোচনা

ভবেশ গায়েন

পিএইচ. ডি. গবেষক, দর্শন বিভাগ, যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়

## সারসংক্ষেপ

সামান্যের সমস্যা বিশ্লেষণ করলে দেখা যায় যে, সেখানে জাগতিক সাধারণ আকারকে বিভিন্ন মতবাদে বিভিন্নভাবে ব্যাখ্যা করা হয়েছে। আমার গবেষণামূলক অভিসন্দর্ভটি মূলত বস্তুবাদ, নামবাদ, দ্রোপতত্ত্ব ও বস্তুস্থিতিতত্ত্বের আঙ্গিকে বিচারমূলকভাবে আলোচিত হয়েছে। গবেষণামূলক প্রশ্ন- প্রথম প্রশ্ন- ব্যক্তি-মন নিরপেক্ষভাবে বিশেষ অতিরিক্ত কেবল বিমূর্ত অভিন্ন সামান্যসত্তা আছে কি? উত্তর- না। দ্বিতীয় প্রশ্ন- বিশেষের সঙ্গে অবিচ্ছেদ্য আকারে সামান্যসত্তা কি স্বীকার করা সম্ভব? উত্তর- হ্যাঁ।

সাধারণত বিশেষ বিশেষ ব্যক্তি বা বস্তুর সমধর্মকে সামান্যধর্ম বলা হয়ে থাকে। যেমন- বিশেষ বিশেষ ব্যক্তির সাধারণ ধর্ম হলো মনুষ্যত্ব, বিশেষ বিশেষ ঘটের সাধারণ ধর্ম হলো ঘটত্ব প্রভৃতি। কিন্তু প্রশ্ন হলো এরূপ মনুষ্যত্ব, ঘটত্ব, পটত্ব প্রভৃতি সামান্যসত্তার স্বরূপ কেমন? তা কি বিশেষ বিশেষ ঘট, পট প্রভৃতির ন্যায় পরিবর্তনশীল, ক্ষণিক, প্রত্যক্ষগ্রাহ্য? নাকি তা অপরিবর্তনীয়, নিত্য, বিমূর্ত? কোন কোন দার্শনিক মনে করেন যে, সামান্যসত্তা অপরিবর্তনীয়, নিত্য ও বিমূর্ত। কিন্তু তা যদি হয় তাহলে পরস্পর বিরোধী স্বভাববিশিষ্ট বিশেষ এবং সামান্যসত্তার

मध्ये सम्यक् क्रीतवे प्रकाशित हवे? येमन- वस्तुवादी (Realist) ग्रीक दार्शनिक  
प्लेटो मने करेन ये, सामान्यसत्ता हलो शाश्वत, अपरिवर्तनशील ।

उक्त वस्तुवादेर प्रतिपक्ष नामवादे (Nominalism) आमरा लक्ष्य करि  
ये, केवल विशेष सत्ता स्वीकार करा हलेओ सामान्येर मन-निरपेक्ष सत्तार मर्यादा  
देओया हय ना ।

अन्यदिके सामान्येर समस्या प्रसङ्गे समकालीनतत्त्व हलो द्रौपतत्त्व (Trope  
Theory) । द्रौपतत्त्वे उक्त परस्पर विपरीत मतेर मध्यवर्ती पन्था अवलम्बन  
करे देखानो हयेछे ये, परस्पर स्वतन्त्र समजातीय विशेषेर कोनो अभिन्न  
सामान्यसत्ता ना থাকलेओ विशेष विशेष वस्तु विशेष विशेष गुण वा सम्यक् आछे ।  
आर सेइ विशेष विशेष वस्तु विशेष विशेष गुण वा गुणयुक्त विशेष विशेष वस्तु  
हलो एक एकटि द्रौप ।

अन्यदिके डि. एम. आर्मस्ट्रॉंग (D. M. Armstrong) सामान्येर समस्या  
प्रसङ्गे ये तत्त्वेर उद्घावन करेछेन सेटि हलो वस्तुस्थितितत्त्व (State of  
Affairs) । येटिर सङ्गे पूर्वोक्त वस्तुवादेर अनेक सादृश्य खूँजे पाओया यय ।  
यदिओ वस्तुवादीदेर मतो तिनि समजातीय विशेष विशेष वस्तु प्रेक्षिते एक  
अभिन्न सामान्यसत्ता स्वीकार ना करे, प्रतिटि विशेषेर प्रेक्षिते एकेकटि  
वस्तुस्थितिर कथा उल्लेख करेन ।

॥धन्यवाद॥